eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 09, September 2024

नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में बनते–बिगड़ते रिश्तों का दंश और सामाजिक बोध

रीना देवी[1], डॉ0 स्नेहलता[2]
[1]शोधार्थी– हिन्दी, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय रजबपुर, गजरौला, (उ0प्र0)
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, रजबपुर, गजरौला (उ0प्र0)

Received: 15 Sep 2024 Accepted & Reviewed: 25 Sep 2024, Published : 30 Sep 2024

Abstract

विभिन्न मुद्दों पर अपनी कलम चलाने वाली प्रसिद्ध और सम्मानीय लेखिका नासिरा शर्मा ने नारी मन की विभिन्न परतों को, पीड़ाओं को न सिर्फ समझा, बल्कि उनका हल भी प्रस्तुत करने का यथा संभव प्रयास भी किया। नासिरा शर्मा नारी जीवन की जटिलताओं को बखूबी समझती है और नारी के आत्मसम्मान उसके अस्तित्व के लिए कलम भी उठाती है। कुमार पंकज के शब्दों में, ''नासिरा शर्मा उन रचनाकारों में हैं जिन्होंने महिला मुद्दों को अपनी कलम का निशाना बनाया है। यह सच है कि महिला के दर्द को महिला से बेहतर भला कौन जान सकता है।''नासिरा शर्मा नारी को मानवीय रूप में प्रस्तुत करती है। नासिरा जी भौगोलिक सीमा से परे जाकर नारीमन की परत–दर–परत टोह लेती है।

कथाकार नासिरा शर्मा की आत्मानुभूतिपरक इस उक्ति के अनुसार लेखक की लेखकीय प्रतिभा समाजोपयोगी व प्रभावशाली सृजन का आधार बनती है। एक संवेदनशील लेखक की नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा जब स्वर्णमय कलेवर से आवृत्त मिथ्या के भीतर स्थित अन्तःसत्ता का साक्षात्कार करती है तब वह लेखक की संवेदनामूलक अजस्र काव्यधारा के रूप में प्रस्फुटित हो उठती है। चिंतन और सृजन के सहज प्रस्फुटन की इस प्रक्रिया में रचनाकार मानव–हृदय से एकाकार होकर उसकी संवेदनाओं को महसूस करता है तथा उसके हृदय की गहराईयों तक जाकर व उसकी पीड़ाओं को यथोचित समाधान की दिशा देकर जीवन को आनन्दानुभूति से परिपूर्ण कर देता है और वस्तुतः सृजन का यही लक्ष्य है। रचनाकार की हृदयानुभूति की शब्दार्थरूप सम्यक् अभिव्यक्ति सकल समाज के मूल स्वरूप को, उसकी पीड़ा को, उसके आचार–विचारों को, मनोभावों को व संवेदनाओं को प्रतिबिम्बित करती है, उनको समाधान की दिशा प्रदान करती है तथा भटकाव से हटाकर ध्येय मार्ग की ओर उन्मुख करती है। साथ ही रचना–वैशिष्ट्य भी स्वतः साकार हो उठता है। इसलिए 'साहित्य समाज का दर्पण है' यह उक्ति पूर्णतः सत्य है।

मूल शब्दः– सम्मानीय, प्रतिबिम्बित, अभिव्यक्ति, प्रतिभा, स्वर्णमय

Introduction

समकालीन हिन्दी लेखिकाओं में नासिरा शर्मा बहुचर्चित और बहुप्रशंसित कथा लेखिका हैं। सृजनात्मक लेखन के साथ ही स्वतन्त्र पत्रकारिता में भी उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया है। वह ईरानी समाज और राजनीति के अतिरिक्त साहित्य, कला व सांस्कृतिक विषयों की विशेषज्ञ हैं। हिन्दी, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी एवं पश्तो भाषाओं पर उनकी गहरी पकड़ है। इराक, ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, सीरिया तथा भारत के राजनीतिज्ञों तथा प्रसिद्ध बुद्धिजीवियों के साथ उनके साक्षात्कार बहुचर्चित हुए हैं जिनसे उन समाजों के विषय में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त होती है। युद्धबन्दियों पर जर्मन और फ्रेंच दूरदर्शन के लिए बनी फिल्म में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत एवं हिन्दी की सजग व सक्रिय कथाकार नासिरा शर्मा एक ऐसी शख्सियत है जो एक लम्बे अरसे से पश्चिम एशियाई समाज की समस्याओं व सामान्य जनमानस के दुःख–दर्द पर अनवरत लिखती आयी हैं। उनके लेखन में एक संवेदनशील रचनाकार और विचारक प्रतिबिम्बित होता है। साथ ही साहित्यिक मानदण्डों की गहरी समझ, सामाजिक समस्याओं से सरोकार और मानवीय मूल्यों की स्थापना के प्रति प्रतिबद्धता भी द्योतित होती है। इसी प्रतिबद्धता के कारण उनके अन्दर अन्तर्निर्हित लेखक देश–काल की सीमाओं का अतिक्रमण कर बाहर से अनुभव बटोर लाता है तथा महिला लेखन से जुड़ी भ्रांतियों को चुनौति देता हुआ समकालीन लेखन की अगली पंक्ति में पूरे दम–खम के साथ आ खड़ा होता है। नासिरा शर्मा उन विरले रचनाकारों में से एक हैं जिनकी हर कृति का कैनवास बहुत विराट है। उनके साहित्य में गंगा–जमुनी संस्कृति का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।

हिन्दी कथा साहित्य में उनका लेखन–संसार मौलिकता एवं गुणात्मकता की दृष्टि से असाधारण स्थान रखता है। उन्होंने पाठकों को जितना अपनी कहानियों और उपन्यासों से प्रभावित किया है उतना ही निबन्ध, रिपोर्ताज, संस्मरण आदि के माध्यम से हिन्दी साहित्य के कोष को समृद्ध किया है। उनके साहित्य में परिलक्षित वैचारिक सुस्पष्टता सर्वाधिक प्रभावित करती है। लेखन के सम्बन्ध में उनका मानना है कि “लेखन का अर्थ केवल आपबीती करना या अपना सुख–दर्द उड़ेलना या दोषारोपण कर अपना क्रोध निकालना नहीं होता है। उसे कलात्मक ढंग से इस तरह कहना होता है कि वह आपकी आपबीती न लगकर जगबीती लगे।”इसके अलावा पुनश्च के संपादक दिनेश द्विवेदी के साथ हुए एक साक्षात्कार में नासिरा जी कहती हैं, “बिना मकसद के उस लेखन से क्या फायदा, जो गिनती में हो। मुझे पता है मेरे इस लेखन से ईरान का वह तबका फैजयाब हो रहा है जो कल जिंदा नहीं बचेगा, क्योंकि गिन–गिनकर मारा जा रहा है। ”इस प्रकार सामाजिक सरोकारों से गहरी संपृक्ति रखने वाली नासिरा शर्मा के लेखन में उन सांस्कृतिक तंतुओं को बड़ी ही सघनता से पहचाना जा सकता है जो पूरे भारतीय उपमहाद्वीप ही नहीं, बल्कि पूरी पश्चिम एशियाई पट्टी तक पसरे हुए हैं और जिनकी सभ्यतागत रगड़ के बीच इस समूचे समाज की रचना होती है।

यद्यपि नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर शोध मेरा प्रत्यक्ष विषय नहीं है तथा उनके उपन्यासों में निहित सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का समग्र अध्ययन करना ही मेरा प्रमुख लक्ष्य है, परन्तु किसी साहित्यकार के कृतित्व की महत्ता व्यक्तित्व की प्रामाणिकता से ही सिद्ध की जा सकती है। चूँकि नासिरा शर्मा हिन्दी कथा साहित्य की पुरोधा हैं, एक संवेदनशील साहित्यकार हैं, समाज की सूक्ष्म अध्येता हैं, मानवता की पक्षधर हैं, मानव मन की कुशल मनोविश्लेषक हैं, मनोभावों की मूर्तिकार हैं, शब्द साम्राज्ञी हैं, वाग्विदग्ध हैं, सांस्कृतिक परम्पराओं एवं मर्यादाओं की रक्षक हैं, युगानुकूल परिवर्तनों की प्रबल पक्षधर हैं, समाज की जड़ों को खोखला करने में लगी हुई विसंगतियों को सुसंगतियों में बदलने की समर्थक हैं। अतः उनके उपन्यासों में निहित सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतनामूलक तत्त्वों के अन्वेषण से पूर्व उनके समग्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक बिहंगम दृष्टिपात करना एक तरह से विषय–प्रवेश एवं भावभूमि–निर्माण के लिए अपेक्षित था। अतः यहाँ सिर्फ उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के परिचयात्मक स्वरूप को प्रस्तुत करना ही मेरा अभीष्ट है।

2. अध्ययन का महत्व

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 09, September 2024

मनुष्य का जीवन तभी सार्थक कहा जा सकता है जब उसमें मूल्य निहित होते हैं। मूल्यों को अपनाकर ही व्यक्ति अपनी सभी अभिलाषाओं की पूर्ति करता है और समाज में सुखद जीवन–यापन करता है। समय के साथ–साथ मूल्यों में परिवर्तन आना स्वभाविक ही है। मूल्य परिवर्तन कई बार संघर्ष का कारण बनता है। इसका साहित्य पर भी प्रभाव पड़ता है क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण है और परिवर्तन समाज का नियम, जैसे–जैसे युग बदलता है वैसे–वैसे साहित्य और मूल्य भी परिवर्तित होते रहते हैं। लेकिन समाज द्वारा मूल्यों के बदले हुए इस स्वरूप को सहज ही नहीं अपनाया जाता कभी–कभी इन्हें स्थापित होने में काफी समय लग जाता है तो कभी इनके कारण संघर्ष की एक स्थिति बन जाती है जिसमें दो दल होते हैं एक दल ऐसा होता है जो पारम्पिरिक मूल्यों और विचारधारा का अनुयायी होता है तो दूसरा नई विचारधारा को लोकप्रिय मानने वाला और समाज में परिवर्तन लाने की आकांक्षा रखने वाला, दो विरोधी दलों में टकराव होना साधारण सी बात है। यह टकराव ही संघर्ष कहलाता है। जो प्रत्येक समाज में पाया जाता है। इस संघर्ष से उपजी परिस्थितयों का चश्मदीद गवाह कोई ओर नहीं एक साहित्यकार ही होता है जो अपने समय के वातावरण, समस्याओं और स्थितियों को अच्छे से जाँचता–परखता है और फिर अपने अनुभव को अभिव्यक्त कर उसे एक साहित्य कृति का नाम देता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह बात बिल्कुल सत्य है कि साहित्य और समाज का गहरा संबंध है बिना समाज के साहित्य निर्मित हो ही नहीं सकता। साहित्य हमें केवल अतीत और वर्तमान से ही परीचित नहीं करवाता अपितु कभी–कभी यह भविष्य की संभावित रूपरेखा की झलक भी प्रस्तुत करता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

- नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में बनते–बिगड़ते रिश्तों का दंश और सामाजिक बोध का अध्ययन

4. बनते–बिगड़ते रिश्तों का दंश

लेखन केवल आपबीती कहना, दुःख–दर्द उड़ेलना या दोषारोपण कर अपना क्रोध निकालना नहीं होता। बल्कि उसे कलात्मक ढंग से कहना होता है कि वह आपकी आपबीती को जगबीती से बदलकर आपकी आपबीती समझे।'' नासिरा शर्मा, एक पारदर्शी और उदार व्यक्तित्व की धनी लेखिका, ने अपने लेखों में समाज को बिना किसी लांग–लपेट के चित्रित किया। नासिरा जी, हं से दूर, इंसानियत का पक्षधर है। घर और पारिवारिक संबंध एक व्यक्ति को सुरक्षित और अपनत्वपूर्ण महसूस कराते हैं। पर कभी–कभी यही संबंधी जाल से लगते हैं। स्त्री–पुरुष संबंध, खासतौर पर पितृसत्तात्मक समाजों में, एक साइकल की दो पहिए हैं, जिसमें दूसरा पहिया टूट जाता है। जब एक व्यक्ति विकसित होता है, तो दूसरे का पूरा व्यक्तित्व बिगड़ जाता है। बहुआयामी लेखिका नासिरा शर्मा ने बनते–बिगड़ते संबंधों की पीड़ा और विषाद को मार्मिक ढंग से चित्रित किया है।

नासिरा शर्मा के उपन्यास "शाल्मली" में पत्नी शाल्मली को दंभी नरेश समझता है, जो पत्नी को पैरों की जूती समझता है, जबकि शाल्मली अपने विवाह को मधुर बनाने की हर संभव कोशिश करती है। शाल्मली को लगता है कि उसका जीवन व्यर्थ है। वह विचार करती है कि धर्मपत्नी बनकर इतना तिरस्कार, अपमान, घृणा, अंकुश भी कोई जीवन है? न पूरी तरह मरने दिया जाता है, न पूरी तरह जीने दिया जाता है; बार–बार मरघट तक ले जाया जाता है और जीवित जलने से पहले चिता से उतार दिया जाता है। जीवन

और मृत्यु में कभी–कभी कितना छोटा फर्क रहता है। आज उसे लगता है कि वह खुद एक आत्मघातक नरक है, जहाँ उसके विचारों और भावनाओं को हर समय मार डाला जाता है।''

दिल के साथी का क्या अर्थ होता है, नरेश यह नहीं समझता। औरतें संबंधों को निभाती भर नहीं बल्कि उसे जीती हैं। परन्तु वास्तव में वे क्या चाहती हैं? उनकी इच्छा, आकांक्षा क्या है पुरुष ये जानना जरूरी नहीं समझता। वो सिर्फ एक लिबास तो नहीं जिसे जरूरत पड़ने पर पहन लिया जाए और जरूरत पड़ने पर पहल लिया जाए और जरूरत खत्म होने पर उतारकर खूँटी पर टाँग दिया जाए। शाल्मली सोचती है– ''अच्छा सुनने और बोलने, समझने और महसूस करने की अपनी इस शक्ति को किस पत्थर के नीचे दबा दे, जो अपना सर उठा न सके।''3 अपनी सारी कोशिशों के बाद उसे लगने लगा था कि कहीं, यह ग्रहण पूरा का पूरा उसके विवाहित जीवन को निगल न जाए।''

समाज और परिवार, स्त्री और पुरुष दोनों से मिलकर बना है। इसमें दोनों की समान भागीदारी है। फिर क्यों उसे संचालित करने की जिम्मेदारी अकेले औरत के कंधों पर डाल दी जाती है। अपेक्षा हमेशा औरतों से ही की जाती है। मर्द सदैव अपनी प्रशंसा चाहता है। वह चाहता है कि सबकुछ उसके मुताबिक चले और औरत अपना सर्वस्व देकर भी कभी उसे संतुष्ट नहीं कर पाती।

'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास की नायिका महरुख अपने बचपन में रफत के साथ हुई टोटके की मंगनी को निभाने के लिए अपने को रफत के मनमुताबिक ढालती है परन्तु एक जगह टिक न पाने वाला रफत महरुख से दूर चला जाता है। रफत को महरुख के साथ किये गए बुरे बर्ताव का जय भी अफसोस नहीं होता। उल्टा वापस लौटने पर वह महरुख के वह उसे ही दोषी ठहराता है। महरुख का आत्मसम्मान चोटिल हआ था। वह बुरी तरह टूटी थी और ऐसी टूटी की फिर न किसी और से न रफत से ही दोबारा जुड़ पायी। आपकी शादी की बात सुनकर मैं टूटी थी, बिखरी थी और गेम की दीवानगी का सबसे खूबसूरत लम्हा सबसे बदसूरत और डरावना होकर मेरे सामने खड़ा हो गया था। जिसके बारे में मैंने सोचा नहीं था और मेरे अंदर की और उसी लम्हें मर गयी थी।

मैं हालात से लड़ते–लड़ते दम तोड़ गई थी। मुझे मेरी ही नजरों में जलील कर आपने ख्वाहिशों के जाल में फंसाकर अंदर की महरुख के परखच्चे उड़ा दिये थे। मैंने कितना सहा, कितनी टूटी। मेरा सुकून और सबकुछ मुझसे दूर चला गया था। आपकी ख्वाहिशों के पुल से गुजरती हुई मैं जिस हाल को पहुँची थी, वहाँ सिर्फ दलदल थीसिर्फ दलदल। मौत और जिंदगी के बीच लटकती वह मैं थी।'' संबंधों के टूटने का जितना खामियाजा औरतें भुगतती हैं, उनके टूटने की जितनी पीड़ा वे झेलती हैं उतना शायद मर्द नहीं। क्योंकि वो उसमें पूरी तरह घुल जाती हैं।

'खुदा की वापसी' कहानी की फरजाना निकाह की पहली ही रात पति के धोखे और झूठ से आदत हो कहती है–''मैं रोज तुम्हारे हांथों मरती हूँ, मुझे डर है कहीं मैं पागल न हो जाऊँ. लाख भूलने की कोशिश करूँ तो भी नहीं भूल पाती। हमारे प्यार की बुनियाद एक झूठ पर एक करेब पर शुरू हुई थी इसकी कसक मुझे तड़पाती है.। मेरा दर्द समझने की कोशिश करो।

वह दर्द लाख या करोड़ के जेवर पहनने से खत्म नहीं होगा।'' फरजाना लाख सोचती है कि सबकुछ भूलकर हालात से समझौता कर ले पर दूसरे ही पल उसका आत्मसम्मान, उसका वजूद रोक देता है। जब एक घर टूटता है तो उसका असर सिर्फ पति–पत्नी पर नहीं पड़ता, बल्कि उससे अन्य रिश्ते–नाते भी

प्रभावित होते हैं। 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में महरुख की सखी अमृता आत्मनिर्भर होते हुए भी पति के अत्याचारों को सहती है ताकि उससे उसके बच्चे प्रभावित न हो परन्तु वो तब टूट जाती है जब उसका पति बच्चों को भी उससे दूर कर देता है। अमृता महरुख से कहती है– समाज के लांछन मुझे तोड़ दे तो और उनके साथ रहना भी जैसे असंभव होता जा रहा है.। मैं थक गई, निचुड़ गई. अब नहीं सहा जाता। मैं अकेली क्या करूँगी, किस–किस को समझाऊँगी।''

5. सामाजिक चेतना

समकालीन परिदृष्य में सामाजिक परिवर्तनों की चर्चा कहानी, उपन्यास, नाटक तथा साहित्य की अन्य विधाओं के माध्यम से की जाती रही है। समकालीन महिला कहानिकारों में प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में नासिरा शर्मा का नाम विषेष रूप से उल्लेखनीय है। महिला कहानिकारों में यद्यपि सभी महिला लेखकों की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं। जैसे मैत्रेयी पुष्पा को यदि बुंदेलखण्ड की संस्कृति एवं वहाँ की शोषित एवं दमित स्त्रियों की अच्छी परख है तो, मालती जोशी को मध्यम वर्ग की महिलाओं के अंतर्मन की समझ। इसी प्रकार नासिरा शर्मा को जहाँ हिन्दू और मुस्लिम दोनों संस्कृतियों का अच्छा अनुभव होने के साथ–साथ दोनों धर्मों तथा अन्य धर्मों की स्त्रियों की संवेदनाओं एवं मानवीय चेतना की गहरी अनुभूति भी है।

नासिरा शर्मा की कहानियाँ स्त्री–पुरुष संबंधों की गहराई से पड़ताल भी करती हैं। वर्तमान समय में स्त्री जीवन की अनेक विडम्बनाओं और सवालों को भी उठाती हैं।1971 के दशक में सारे बदलावों के बाबजूद, स्त्री की आर्थिक, सामाजिक स्थिति में कोई उत्साहजनक परिवर्तन नहीं हुआ। इस दशक के बाद भारत में नारीवादी आंदोलन की सक्रियता बढ़ी। बालिका भ्रूणहत्या, लिंगभेद, नारी स्वास्थ्य और स्त्री साक्षरता जैसे विषयों पर भी नारी आंदोलनकारी सक्रिय हुए।

हिन्दी कहानी ने भी इस तथ्य को गंभीरता से लिया। इस दशक की एक विशेष प्रवृत्ति नारी आंदोलन का नया रूप ग्रहण करना है, जिससे कहानियों में स्त्री विमर्श केन्द्रीयता प्राप्त करने लगता है। ध्यातव्य है कि नारी नियति का चित्रण करने में कहानी लेखिकाएँ प्रमुख भूमिका निभाती हैं, जिसमें नासिरा शर्मा प्रमुख रूप से उभरकर सामने आती हैं।

नासिरा शर्मा के कहानी संग्रह 'बुतखानाद्य की पहली कहानी नमकदान है। यह कहानी पति–पत्नी के संबंधों को बया करती है, जिसमें कहानी का नायक जमाल और नायिका गुल दोनों पति–पत्नी हैं। कहानी के अंत में जमाल कहता है, ''तुम आजकल नमकदान मेज पर क्यों नहीं रखती हो?द्यद्य गुल ने धीरे से कहा, ''ताकि नमक की अहमियत याद रहे क्या मतलब? लोग नमक को भूलते जा रहे हैं। गुल ने कहा। मैं चलता हूँ, शायद शाम को घर लौटने में देर हो जाए तो परेशान मत होना। कहता हुआ जमाल नैपकिन से मुँह पोछता हुआ उठा और बाहर की तरफ बढ़ा। गेट के बाहर कार स्टार्ट होने की आवाज गुल के कानों तक पहुँची। जमाल जिस राह पर निकल गया है, वहाँ इतनी जल्दी वापसी मुष्किल है।

''मुझे चश्मपोशी की आदत डालनी चाहिए। दूसरों की बुराई को नजर अंदाज करने में ही अब जिंदगी की भलाई है। सोचते हुए ठीक अब्बू के अंदाज में कुछ बोले। गुल सर झुकाए नाश्ता करती रही।

उपर्युक्त कथन से यह बात निकलकर आती है कि भारतीय समाज को उन सभी स्त्रियों को यह अपनी नियति मान लेनी चाहिए, जिसके पति जमाल जैसे लोग हैं, नहीं तो आए दिन विवाद होगा या संबंध

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 09, September 2024

विच्छेद। दोनों के लिए एक स्त्री को तैयार रहना पड़ेगा, क्योंकि इन सभी के पीछे एक पुरुषवादी मानसिकता कार्य करती है। हम पुरुष हैं, चाहे जो करें, परन्तु तुम स्त्री हो। पतिव्रत का पालन करना तुम्हारा धर्म है, परन्तु पत्निव्रत का पालन करना हमारा धर्म नहीं है, क्योंकि यह नियम हमने बनाये हैं।

संग्रह की दूसरी कहानी का शीर्षक 'बुतखानाय है, जो फारसी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ मंदिर या देवालय होता है। परन्तु यहाँ बुतखाना से तात्पय्र ऐसे स्थान से है, जहाँ सभी मानव, मनुष्य नहीं 'बुत्तय अर्थात् बेजान मूर्ति की भाँति हैं, जिसमें न कोई संवेदना है, न कोई भावना और न ही मनुष्यता। परन्तु इसके शाब्दिक अर्थ की ज्यादा पड़ताल न करते हुए कहानी के मूल कथ्य पर आते हैं, जिसमें लेखिका ने समाज की उस सच्चाई को व्यक्त किया है, जो कहीं न कहीं आधुनिक समय में स्पष्ट दिखाई दे रहा है। शीर्षक कहानी का मुख्य पात्र 'रमेशय है, जो छोटे शहर इलाहाबाद से महानगर दिल्ली में नौकरी के सिलसिले में जाता है। वहाँ पहुँचकर रमेश देखता है किस तरह मानवीय संवेदना दम तोड़ रही है। सभ्यता, संस्कृति और संस्कार भी जमीनदोह हो रहे हैं। शिक्षा बड़े व्यवसायियों का व्यवसाय मात्र बनकर रह गई है। रमेश एक दिन बस में यात्रा कर रहा था तो बस अचानक रूकी और देखते–देखते ही भीड़ इक–ी होने लगी। रमेश देखता है कि बस के नीचे एक युवक की लाश है। यह और कोई नहीं यह वही युवक है, जिससे एक दिन सिनेमा देखते समय मिला था। वह आगे बढ़ा तो कंडक्टर की सीटी गूँजी, चलो–चलो। शोर मचाती, गाली बकती भीड़, यंत्र चालित–सी सीटों पर जमने लगी। वह जड़–सा वहीं खड़ा रहा, किसी ने उससे धीरे से कहा–क्या? वह अपनी पहचान वाला था? वह क्या उत्तर दे। उसको कुछ समझ में नहीं आ रहा था।4 उसने कहा – मेरी मानिए तो फूट लीजिए। ड्राइवर–पुलिस जाने बेकार में आप फसियेगा। यह एक महानगरीय सभ्यता, मानवीय सोच के साथ उसकी सच्चाई को बया कर रहा था, क्योंकि हम सभी उसी भीड़ का हिस्सा बने रहना चाहते हैं, जो केवल मूक दर्षक हैं।

आपस में कुछ छींटाकशी की और चलते बने, क्योंकि इसकी हमें आदत–सी बन गई है। हम प्रत्येक प्रश्न से बचकर निकलना चाहते है, हम सुरक्षित हैं, हमारे बीबी बच्चे सुरक्षित हैं और हमें क्या चाहिए? परन्तु यह सत्य नहीं है। आज जो सड़क पर दम तोड़ दिया वह कोई और नहीं, हमारे और आपके बीच का है। परन्तु संवेदनाएँ कहीं मर सी गई हैं। चाहे वह व्यर्थ के पचड़ों में न पडने के कारण या हम इतने आत्मकेन्द्रित हो गए हैं कि हम और हमारे परिवार के लोग सुरक्षित रहें बस। दूसरे की जान की कोई कीमत नहीं है। इस आर्थिक जीवन की भाग–दौड़ में हमें पैसे के अलावा और कुछ दिखाई नहीं देता, चाहे वह मानवीय संवेदना हो या नैतिक मूल्य। सभी को हम तार–तार कर रहे हैं। कहानी का पात्र रमेश तमाम सवालों और जबावों के बीच गुजरता हुआ अंत में उसी बुतखाने की 'बुत्तय मात्र बन रह जाता है। नसिरा शर्मा 'अपनी कोखय कहानी में स्त्री की उस समस्या को उजागर करती हैं, जिसका स्त्री प्राचीनकाल से ही सामना कर रही है। यह प्रश्न है स्त्री के पहचान का, यह प्रश्न है स्त्री के अस्तित्व का और यह प्रश्न है उसके अधिकार का। जिसका यह पुरुष समाज सत्तात्मक समाज हमेशा से गला घोटता आया है। यद्यपि आज हम बात करते हैं समानता, समान अधिकारों, बराबरी का दर्जा देने की और सबसे बड़ी बात कि लड़के–लड़की में भेद न करने की। क्या हम आज 21 वीं सदी में इस मानसिकता से बाहर आ पाए हैं, कि लड़की हो या लड़का उसमें कोई अंतर नहीं है। यदि हम इसकी पड़ताल करें तो पायेंगे कि कुछेक परिवर्तनों के साथ उसमे कोई अंतर नहीं, बल्कि सोच जस की तस बनी हुई है।

इन्हीं बातों और विचारों को व्यक्त करती है यह कहानी 'अपनी कोख्'। इसके पात्र साधना, संदीप और सरिता हैं। इस कहानी की मुख्य पात्र साधना एम.ए. में सर्वोच्च अंक जाना चाहती है, परन्तु उसके घर वाले अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त होना चाहते हैं। साधना विवाहित होकर जब ससुराल आती है तो उसके सपने जमीनदोह होने लगते हैं। अब शुरु होती है उसकी वास्तविक लड़ाई। सास को अपनी बहू की गोद हरी–भरी चाहिए, वह भी बेटे से। परन्तु साधना के बच्ची के आगमन से जैसे सम्पूर्ण खुशियाँ काफूर हो गईं। अभी सरिता छः माह की ही थी। साधना फिर गर्भवती हो गई, परन्तु साधना की सास को पुत्र चाहिए, क्योंकि पुत्र ही परिवार का तरण–तारण करता है। ऐसी मान्यता हम बनाये हैं, परन्तु साधना ने इस बार भी पुत्री को ही जन्म दिया तो उसकी सास को जैसे साँप सूँघ गया। तीसरी बार जब साधना को पता चला कि इस बार उसके गर्भ में पुत्र पल रहा है, इस खबर ने साधना को भी अत्यन्त खुषी प्रदान की। परन्तु एक प्रष्न साधना के मन को लगातार व्यथित कर रहा था। यदि लड़का पैदा हुआ तो मेरी दोनों लड़कियों को निगल जाएगा। अनगिनत प्रश्नों और उत्तरों से जूझती साधना अपने मन–मस्तिष्क के ऊहापोह से निकलने में कामयाब हो गई और संवेदना के उस बिन्दू पर जाकर अटक गई कि लड़के–लड़कियों में भेद करने वाला यह समाज तब तक बलवान बना रहेगा जब तक नारी उसके इशारों पर चलती रहेगी। कोख उसकी अपनी कोख है, चाहे वह बच्चा पैदा करे, चाहे पैदा न करे। चयनकर्ता वही है। अगर वह मर्दों को पैदा करना बंद कर दे तो इस समाज का क्या होगा? जिसके ठेकेदार अपनी ही जननी के विरोध में हत्याओं का काफिला बना रहे हैं। कानून तो वह बनाते है पर पारित औरतों पर करते हैं और हम औरतें भी उसकी भागीदार बन अपनी मानिसकता खो संज्ञा शून्य बन जाते हैं और अपने ही विरोध में खड़ी हो जाती हैं, परन्तु साधना अपने विरोध में नहीं खड़ी होगी। यह जीवन उसका है, इस जीवन को अपनी इच्छा से आकार देगी। अपनी जमीन ही नहीं अपने आसमान को भी खुद नापेगी, यही तो उसके एक स्वतंत्र स्त्री होने की पहचान है। वह इस पहचान को बरकरार रखेगी और पूरी दुनिया को दिखायेगी। अपनी बेटियों के सपनों को पंख देने के लिए साधना बेटे का गर्भपात करेगी, उसने निश्चय कर लिया। 'इस प्रकार यह कहानी बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ कथन को भी सार्थक करती है। यह कहानी इसके साथ–साथ नारी मन तथा उसके मनोविज्ञान को खोलती है।

इस प्रकार नासिरा शर्मा की कहानियाँ स्त्री मनोविज्ञान के साथ–साथ उसके अन्तर्मन को परत–दर–परत खोलती हैं। इसके अतिरिक्त मानवीय संवेदनाओं एवं मनुष्यता को उजागर करती हैं। इनकी कहानियाँ सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना और इंसानी जटिल प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति का दस्तावेज हैं। यह वर्तमान समय की विषमताओं को इस सहजता से पिरोती हैं कि इंसानी ललक पात्रों में बाकी ही नहीं रहती, बल्कि टूटे रिश्तों और बदलते मानवीय मूल्यों और सरोकारों की कचोट पाठकों को गहरी तपकन का एहसास देती हैं।

6. निष्कर्ष:

नासिरा शर्मा वर्तमान दौर की ज्वलंत हस्ताक्षर हैं। इन्होंने अपने अनुभव की लेखनी से ऐसे साहित्य को गढ़ा है, जो हमें एक नई राह बताता नजर आता है। आपके साहित्यिक फलक का दायरा फैला हुआ है। साहित्य की तमाम विधाओं में आपकी लेखनी ने अपना जादू बिखेरा ळें निडरता के साथ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर लेखन कार्य करने वाली पहली सशक्त लेखिका है नासिरा शर्मा जिसका आधार है इंसानियत, प्रेम, संवेदना और ईमानदारी का विराट भाव जो धरती को लांघ कर क्षितिज तक फैला है।

नासिरा शर्मा के संपूर्ण कथा–साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् उनके जीवन और साहित्य से संबंधित कई घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में नासिरा जी के व्यक्तित्व और साहित्यिक कार्यों का विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। यहाँ हम अपने शोध एवं विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों को प्रस्तुत कर रहे हैं।

नासिरा शर्मा संभवतः पहली ऐसी बौद्धिक हिंदी लेखिका हैं जो रचना के साथ विचार के स्तर पर भी काफी सक्रिय है। इसका भारतीय ही नहीं बल्कि दूसरे एशियाई मुल्कों खासकर मुस्लिम देशों की संस्कृति, समाज और राजनीति पर गहरी पकड़ है, उन्हें इन विषयों का विशेषज्ञ भी माना जाता है। इन देशों के साहित्य, राजनीति, परिवेश और बौद्धिक हलचलों पर उन्होंने पर्याप्त विमर्श और नियमित लेखन किया है।

जीवन में विभिन्न संबंधों और रिश्तों का विकास होता है। ये संबंध कहीं आत्मज्याति को प्रेरित करते हैं तो कहीं क्लेश और दुःख का कारण बनते हैं। नासिरा शर्मा ने अपने कथा साहित्य में इन संबंधों को बहुत ही आसानी से बताया है। नासिरा शर्मा ने हिंदू और मुस्लिम संस्कृति की सहयात्री रही है और किसी भी पक्ष के प्रति आतुरता या मोह नहीं दिखाया है। लेखिका नासिरा शम्र ने नारी जीवन की विभिन्न विसंगतियों को बहुत बीरीकी से देखा–परखा है, खासतौर पर मुस्लिम समुदाय की महिलाओं के साथ किये जा रहे अनीति का. लेखिका ने अपने कथा साहित्य में उस पीड़ा और छटपटाहट को बहुत मार्मिक ढ़ंग और सहजता से दर्शाया है।

संदर्भ –ग्रंथ सूची

1. आण्टिणी (डॉ.) पी.एम.– आँचलिक उपन्यास :एकता की खोज, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, प्रथम 1993
2. गुप्ता (डॉ.) कमला, हिन्दी उपन्यासों में सामन्तवाद, अभिनव प्रकाशन नईं दिल्ली, सं. 1979
3. गुप्त (डॉ.) ममता –धर्मगाथा और जातीय संघर्ष, राधा रानी प्रकाशन, दिल्ली, सं.1998
4. गुप्त रमेशचन्द्र–बिहारी : व्यक्तित्व एवं जीवन दर्शन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम 1974
5. गुप्त (डॉ.) ज्ञानचंदके अनुसार – स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली सं.1986
6. जतकर (डॉ.) पुष्पा, रचनाकार रेणु, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम 1992
7. (डॉ.) देवराज : संस्कृति का दार्शनिक विवेचन, प्रकाशन ब्युरो सूचना विभाग उत्तरप्रदेश, सं.1972
8. देशमुख (डॉ.) रमेश : आठवें दशक की हिन्दी कहानी और जीवन मूल्य, विधा प्रकाशन कानपुर सं.1994
9. देसाई (डॉ.) बापूराव , आधुनिक हिन्दी निबंध, पृ0 114 चिंतन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम 1991
10. धूमिल : संसद से सड़क तक, सं.1972, पृ.59 राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
11. नगेन्द्र (डॉ.) भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,सं. 1974
12. नगेन्द्र (डॉ.) : नयी समीक्षा : नये संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, सं.1985
13. पानेरी (डॉ.) हेमेन्दकुमाप्र पानेरी, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास : मूल्य–संक्रमण, संघी प्रकाशन, जयपुर, सं. 1974
14. बड़ोले (डॉ.) भागीरथ, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में मानव–मूल्य और उपलब्धियाँ, स्मृति प्रकाशन, नई दिल्ली सं.1983
15. भारती (डॉ.) धर्मवीर, मानव–मूल्य और साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ काशी, सं. 1960